स्वदेशी आन्दोलन (Swadeshi Movement)

बंगाल विभाजन के विरोध स्वरूप 'बंगाल विरोधी आन्दोलन' का प्रादुर्भाव हुआ, जिसके फलस्वरूप स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलनों का उदय हुआ। स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन परस्पर अत्यन्त नजदीक से जुड़े हुए थे और भारतीयों के लिये नये नहीं थे। स्वदेशी शब्द का प्रथम प्रयोग स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया था और महाराष्ट्र के 'प्रभाकर' समाचार-पत्र के माध्यम से इसका प्रथम सन्देश 'लोक हितवादी' संगठन को दिया गया था। बंगाल में नव गोपाल मित्रा और राजनारायण बोस ने 'हिन्दू मेला' नामक समाचार-पत्र के द्वारा यह सन्देश प्रसारित किया कि लोग स्वदेशी वस्तुओं को अपनायें और विदेशी सामान का बहिष्कार करें। पश्चिमी भारत में स्वदेशी के प्रचार का कार्य दादाभाई नौरोजी, एम. जी. रानाडे, जी. वी. जोशी और बी. जी. तिलक द्वारा किया गया और बंगाल में इस सन्देश का प्रचार एवं प्रसार भोलाचन्द्र, एस. एन. बनर्जी और के. के. मित्रा द्वारा किया गया। उत्तरी भारत में यह दायित्व मदन मोहन मालवीय, मुरलीधर और सेनदास आदि ने सँभाला। वस्तुतः स्वदेशी का प्रचार 1870 से 1896 ई. के मध्य कई प्रमुख नेताओं, संगठनों, सभाओं और भारतीय समाचार-पत्रों के द्वारा किया गया। बहिष्कार आन्दोलन इसी का एक अंग था। बहिष्कार के साथ स्वदेशी का प्रयोग स्वतः जुड़ा हुआ था तथा बंगाल विभाजन से पूर्व भारतीय अपने आर्थिक अधिकारों को केवल इसी माध्यम से प्राप्त कर सकते थे। 1892 में ऐसे ही एक आन्दोलन से भारत के मृतप्रायः वाणिज्य और उद्योगों में प्राण फूँकने का एक प्रयास किया गया था। पुनः 1875, 1876 और 1878 में कई लोगों ने मैनचेस्टर के कपड़े का बहिष्कार किया

था। 1896 ई. में तिलक ने और 1902 ई. में एस. एन. बनर्जी ने भारतीय उद्योगों की सुरक्षा के लिये अंग्रेजी सामान के बहिष्कार और स्वदेशी के प्रयोग पर बल दिया था।

अतः स्पष्ट है कि स्वदेशी और बहिष्कार का मार्ग भारतीयों को पहले से ही ज्ञात था। परन्तु 1904 ई. से पहले इस विचार को भारतीय नेताओं ने स्थगित किया था और वे इसके द्वारा भारत के आर्थिक हितों की सुरक्षा करना चाहते थे परन्तु कालान्तर में भारतीयों ने अनुभव किया कि इस शस्त्र का प्रयोग राजनीतिक उद्देश्य से भी किया जा सकता है। 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता टाउन हॉल में और 28 दिसम्बर, 1905 को वहीं के काली घाट मन्दिर में इससे सम्बन्धित प्रस्ताव पारित किये गये और देवी के सम्मुख भक्तों ने प्रतिज्ञा की कि 'जहाँ तक सम्भव होगा वे विदेशी वस्तुओं का प्रयोग नहीं करेंगे·····और जो कार्य कोई देशी व्यक्ति कर सकता, उसे किसी विदेशी से नहीं करायेंगे।' साथ ही यह घोषणा की गयी कि, "जब तक विभाजन का प्रस्ताव वापस नहीं लिया जायेगा, तब तक ब्रिटेन में निर्मित वस्तुएँ नहीं खरीदी जायेंगी।"

अंग्रेजी सरकार ने भारतीयों के इस आन्दोलन को कुचलने के लिये दमनात्मक साधनों का प्रयोग प्रारम्भ किया। फलतः देशभक्तों ने इस आन्दोलन को सफल बनाने के लिये चार-सूत्री कार्यक्रम की घोषणा कर दी, जो निम्नलिखित थे—

(i) अंग्रेजी कपड़ा, नमक, चीनी आदि का प्रयोग न करना।

(ii) अंग्रेजी भाषा न बोलना एवं न पढ़ना।

(iii) सरकार के आधीन अवैतनिक पदों व परिषदों से त्याग-पत्र देना।

(iv) विदेशी वस्तु क्रय करने वालों का सामाजिक बहिष्कार करना।

धीरे-धीरे परिस्थितियों के अनुसार इसमें अन्य कार्यक्रम भी संयोजित कर दिये गये और यह सलाह दी गयी कि लोगों को सरकारी स्कूलों और न्यायालयों आदि का भी बहिष्कार करना चाहिए तथा राष्ट्रीय स्कूलों को शिक्षा के विकास हेतु प्रारम्भ करना चाहिए तथा अपने परस्पर झगड़ों को वार्तालाप के द्वारा सुलझाना चाहिए। स्वदेशी से तात्पर्य पूर्ण भारतीयकरण से था। अतः ये दोनों आन्दोलन विद्वानों की राय में एक ही सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं। यदि स्वदेशी सकारात्मक कदम था तो बहिष्कार नकारात्मक था। इसीलिए सम्भवतः इसे 'स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन' के नाम से जाना जाता था।

स्वदेशी आन्दोलन किसी वर्ग अथवा जाति से सम्बन्धित नहीं था। अपितु इसमें हिन्दू-मुस्लिम, गरीब-अमीर और स्त्री-पुरुष सभी ने समान रूप से भाग लिया था। आन्दोलन के द्वारा सामूहिक सभाओं का आयोजन किया गया, विदेशी माल विक्रेताओं की दुकानों का घिराव किया गया और विदेशी माल की सार्वजनिक होली जलायी गयी। इस समय सामूहिक एकता और सहयोग का परिचय देते हुए गरीबों ने भी पूरा-पूरा साथ दिया। मोचियों ने अंग्रेजों के जूते मरम्मत करने से इन्कार कर दिया, घरेलू नौकरों और खाना पकाने वालों ने घरों में विदेशी सामान प्रयोग करने वालों के यहाँ काम करने से मना कर दिया, धोबियों ने विदेशी कपड़े धोना बन्द कर दिया तथा छात्रों और बीमार व्यक्तियों ने भी स्वदेशी आन्दोलन में सहयोग दिया। इस आन्दोलन में सभी वर्गों ने देश के प्रति अपनी भक्ति और धार्मिक उत्साह के साथ भाग लिया। फलतः स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन को अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई। **ए. आर. देसाई** ने इस आन्दोलन के फलस्वरूप वस्त्र उद्योग पर हुए दुष्परिणाम का वर्णन करते हुए लिखा है कि, "यह नितान्त सत्य है कि कलकत्ता के गोदाम कपड़े से भरे पड़े थे और

उसका विक्रय नहीं किया जा सका। कई कपड़े की मारवाड़ी फर्म नष्ट हो गयीं और बहुत-सी विशाल यूरोपियन फर्म या तो बन्द हो गयीं अथवा उनकी बिक्री कम हो गयी।"

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन के फलस्वरूप अंग्रेजी सरकार को अनेकानेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और देश के सभी वर्गों में राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति की भावना का संचार हुआ जो अन्ततोगत्वा अंग्रेजों के भारत से पलायन का एक महत्वपूर्ण कारण बना।